रमेशचंद्र शाह

हाथी की करतूत

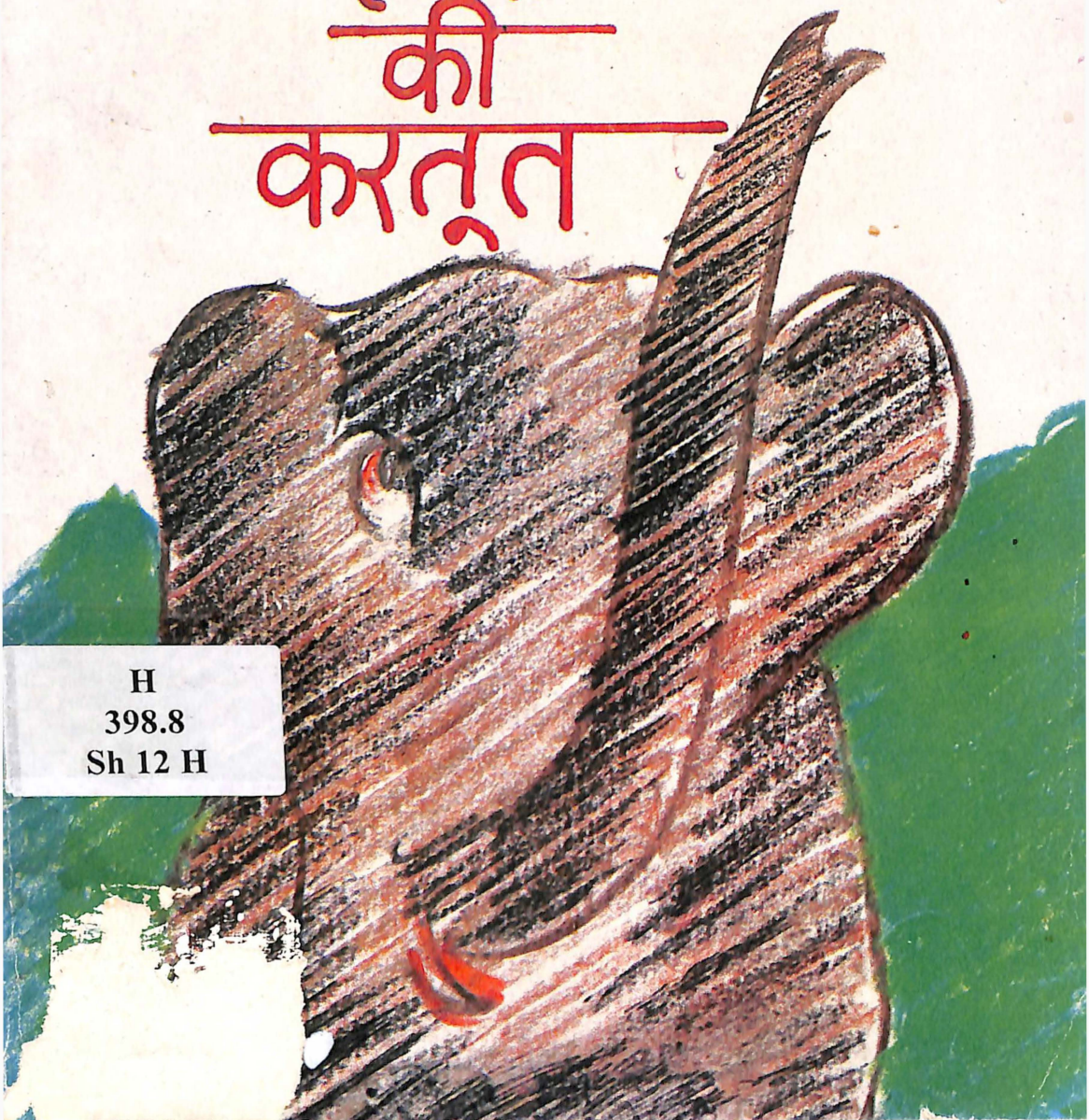

H
398.8
Sh 12 H

INDIAN INSTITUTE OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY SIMLA

हाथी की करतूत

रमेशचंद शाह

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

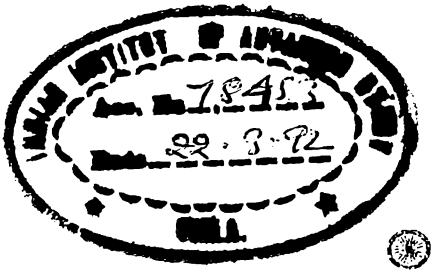

Library IIAS, Shimla
H 398.8 Sh 12 H
00078453

राजुला और शंपा
को समर्पित

एक ज़रूरी बात

यहाँ छपी कविताएँ सचित्र जा रही हैं पर सजावट की तरह नहीं। चित्र पहले बना और फिर उस चित्र को देखते-देखते चित्र में से ही मानो, कविता भी आप से आप बन गई। इस तरह यह एक मज़ेदार सूझ या कि खेल है। या कह लीलिए, प्रयोग है, जिसे और लोग भी मजे-मजे में आजमा सकते हैं, अपना सकते हैं। एक बाल-चित्रकार की कल्पना और सूझ किस तरह एक बाल-कविता को उपजा सकती है, इसका एक उदाहरण है हर कविता और उसके साथ का चित्र···

आशा है, खेल-खेल में उपजी ये चित्र-कविताएँ काफी सारे बड़ों को अपने बच्चों के आड़े-तिरछे करतबों को ज़रा ग़ौर से देखने को प्रेरित करेंगी।

रमेशचंद्रशाह

कविता-क्रम

हाथी की करतूत	1
पूछताछ	2
चोरी	4
रानी की अगवानी	6
सुबह-सुबह	8
छंगाजी और गंगाजी	10
कीड़े ने कहा	12
बुनते-बुनते	14
खेल-खेल में	16
ढोलक	18
जालीराम	20
कौन यह	22
लड़की चली	24
पंख प्रसाद	25
चित्र-कन्या	28

हाथी की करतूत

बड़े ठाठ से चले नहाने
बड़े ताल पर हाथी।
अभी नहीं निकला था सूरज
सोए थे सब साथी।

सूँड़ सोखने लगी समन्दर
गया उतरता पानी।
हाय-हाय कर उठीं मछलियाँ
कैसी यह नादानी!

निकल रही अब नदी नाक से
मजा आ गया सचमुच।
बची हुई यह एक टाँग ही
बता रही है सब कुछ।

पूछताछ

पूछ रही मछली मछुए से
क्या लगते हो मेरे?
साँप पूछता है कछुए से
हाल-चाल क्या तेरे?

सूरज ने धरती से पूछा
लगा रही क्यों फेरा?
धरती ने सागर से पूछा
क्यों मुझको है घेरा?

लगे हाथ मैंने भी पूछा
आसमान से जाकर—
"ढूँढ़ रहे तुम किसको दादा,
इतने दिए जलाकर"?

चोरी

रामू-दामू चढ़े पेड़ पर
खाने कच्चे आम।
तभी अचानक पड़ा सुनाई
"रख दो पहले दाम"।

मारे डर के टपके ज्यों ही
लिया किसी ने थाम।
बिल्कुल अपने बाबा यह तो!
पूछ रहे हैं नाम।

"बाबा अबसे नहीं करेंगे"
कान पकड़ते चोर।
जाते-जाते मगर गए फिर
बाबा को झकझोर।

रानी की अगवानी

फूलों के घर शोर मच गया
काँटे लगे मचलने।
रानी नागफनी निकली हैं
कैसे आज टहलने?

काँटों का है ताज, और है
काँटों की ही साड़ी।
नहीं चाहिए नौकर-चाकर
नहीं चाहिए गाड़ी।

पूरा नगर उमड़ आया है
देखो अगवानी को।
सुना यहाँ के लोग आजकल
तरस रहे पानी को।

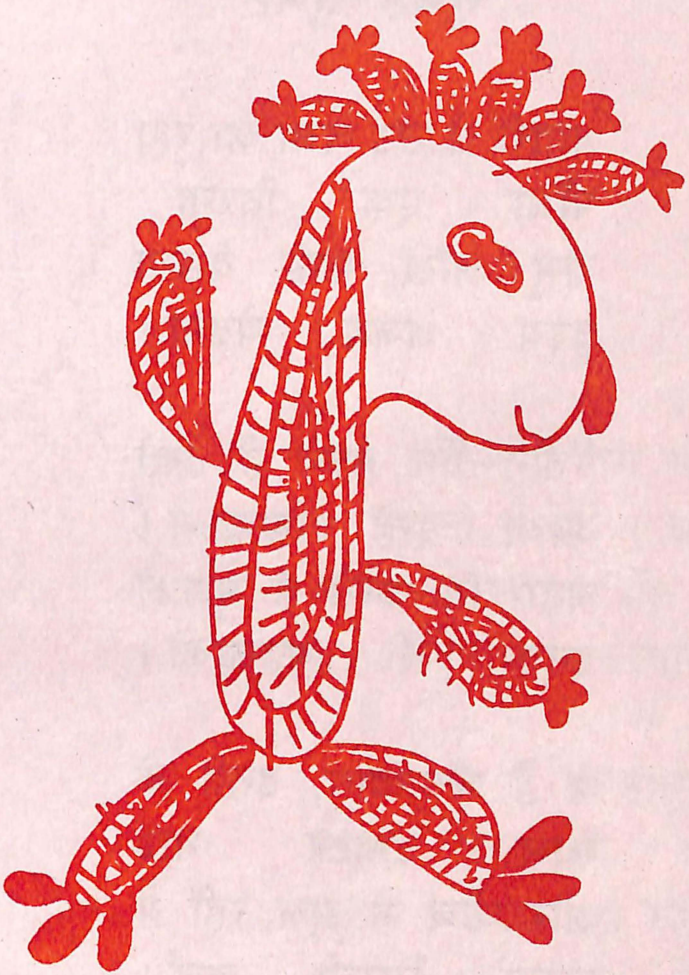

सुबह-सुबह

क्यारी से उठ चला आ रहा
पौधा एक तिरंगा···
रामू आँखें फाड़ देखता
दृश्य अजब बेढंगा।

"तीन-तीन बच्चे हैं देखो
आओ इन्हें खिलाओ।
बड़ा तंग करते हैं मुझको
इनका जी बहलाओ।

ये हैं बैंगनदास, इन्हीं के
लाल टमाटर भाई
और बीच में झूल रहीं ये
बहना मिरची बाई।

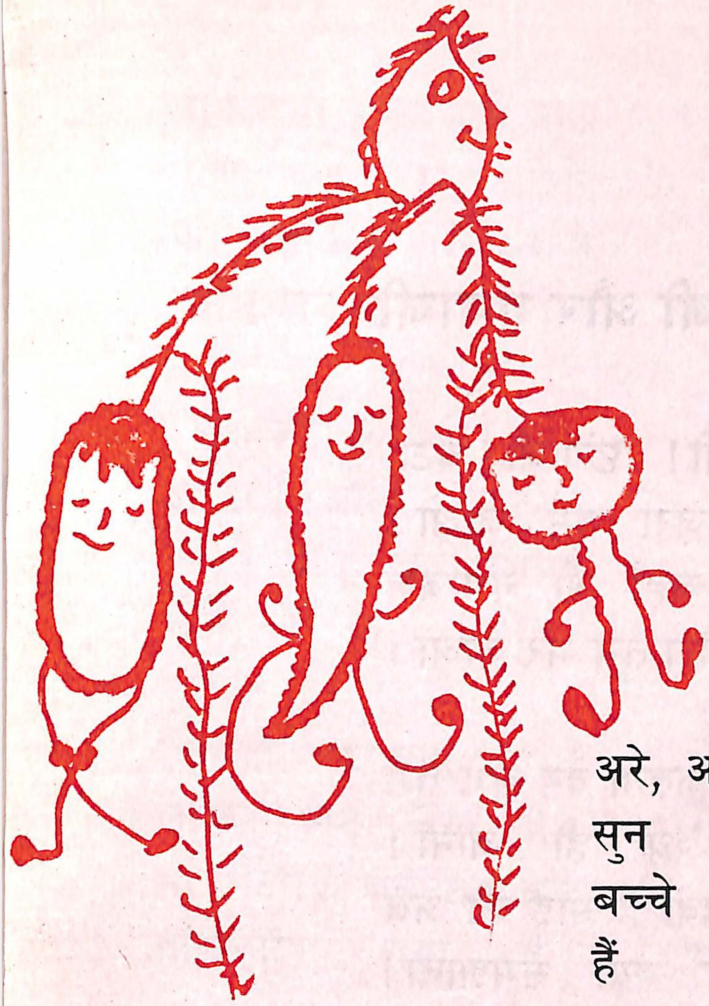

अरे, अरे क्यों भाग रहे हो
सुन लो मेरी बात।
बच्चे तो करते ही रहते
हैं ऐसा उत्पात।"

"भूत! भूत!" चिल्लाता रामू
भागा घर की ओर।
कुहरा था छा रहा बाग में
अभी हुई थी भोर।

छंगाजी और गंगाजी

छंगाजी! छंगाजी! बेटा,
दौड़ ज़रा तुम जाओ।
मिले जहाँ भी गंगाजल
यह लोटा तुम भर लाओ।

चाहे जितनी देर लगे तुम
लेकर के ही आना।
यही दवा है माई की अब
तुमको क्या समझाना!

बाड़मेर से हरिद्वार तक
होगी कितनी दूरी?
छंगा पैदल, मनोकामना
कैसे होगी पूरी?

नहीं बचा है काया में कुछ
प्राण कण्ठ में अटके;
पता नहीं कब लगें ठिकाने
जनम-जनम के भटके।

"छंगाजी! छंगाजी! बेटा,
खोलो आँखें खोलो।
कबसे मैं हूँ खड़ी सामने
उठो, अरे कुछ बोलो।"

छंगाजी अब बुढ़ा गए हैं
लेकिन मन चंगा है।
माता उनकी वसुन्धरा अब
गाँव-गाँव गंगा है।

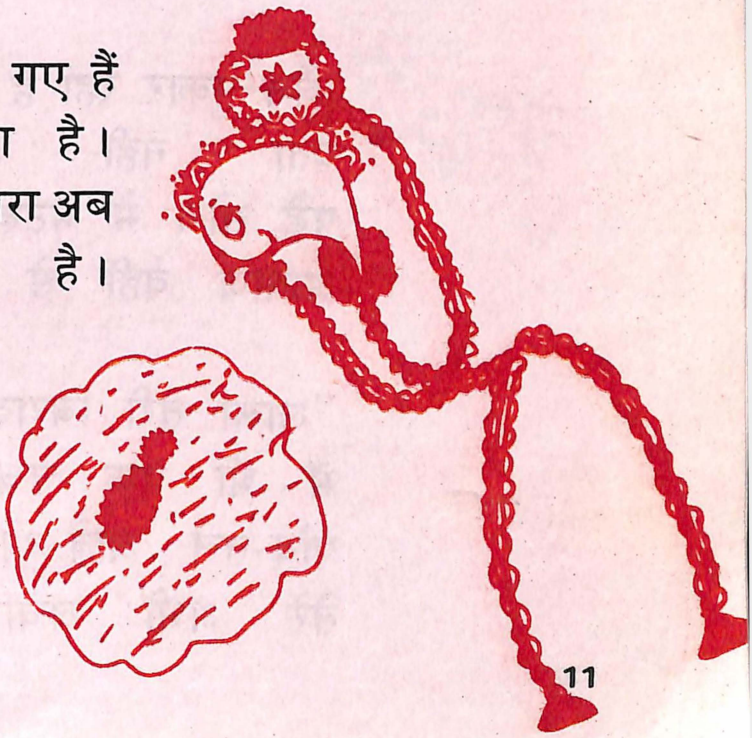

कीड़े ने कहा

फुलवारी में टहल रहे थे
अपनी मटरू भाई;
"राम राम भैया, कैसे हो?"
सहसा पड़ा सुनाई।

कौन पुकार रहा है मुझको
देता नहीं दिखाई;
पड़े सोच में मटरू, फिर
आवाज वहीं से आई।

"लाला तेरी बिरादरी का
मैं भी एक चचा हूँ।
पाँव-तले आते-आते जो
तेरे अभी बचा हूँ।

एक ज़माना था रखते थे
हमें जतन से माली।
भोंपू बजा-बजा अब खुद की
करते हम रखवाली।"

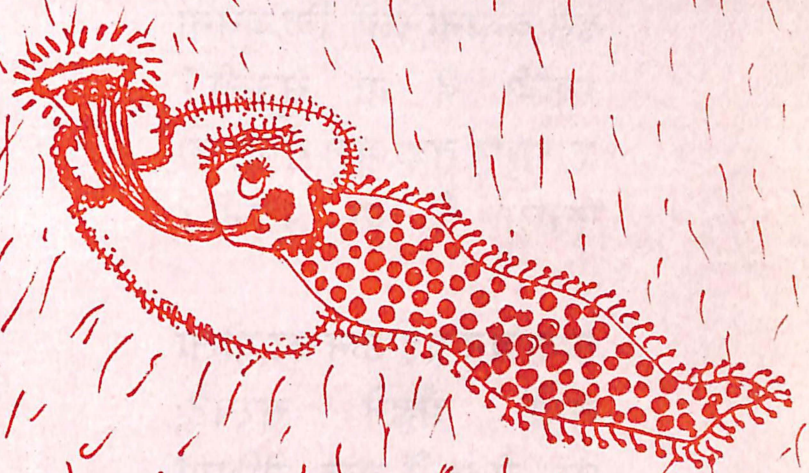

बुनते-बनते

इसे बनाना कहें, कि बुनना
स्याही है या सुतली?
कारीगर तक भूल गया, लो
पुतला है या पुतली?

नाक बन गई ऊन का गोला
लगी दौड़ने सरपट;
सिर से फूटीं बन्द गोभियाँ
खाकर कूड़ा-करकट।

मुँह तो टेढ़ा दिया, मगर लौ
उधर आँख में लपकी;
लेकिन इसके बाद लग गई
चित्रकार को झपकी।

खेल-खेल में

किस कीड़े की करामात तू,
किस जादू की पुड़िया!
अभी नवेली गुड़िया थी तू,
अभी हो गई बुढ़िया!

जड़ समेत पौधा ज्यों कोई
लगे अचानक उड़ने
मोरपंख की आँख दौड़ती
आसमान से जुड़ने।

तारों से उतरी नसैनियाँ
फूलों को ले आने।
चन्दा मामा सिखा रहे इस
नए खेल के माने।

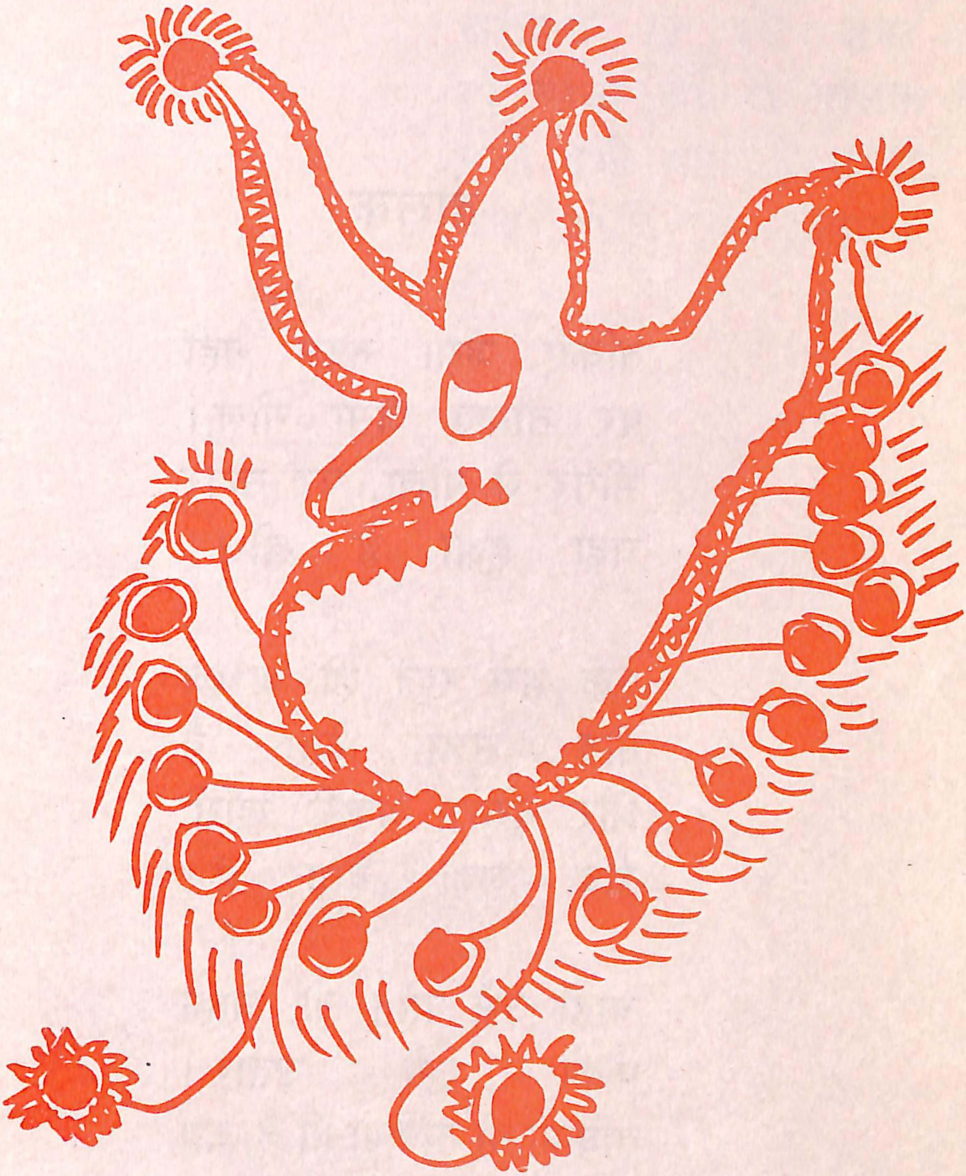

ढोलक

तकिए जैसा नरम नहीं
पर तकिए जैसा गोल।
भीतर से पोला, पर ऊपर
चढ़ा हुआ है खोल।

एक हमें छूते ही अच्छा
नींद सुला देता है
और दूसरा अच्छी ख़ासी
नींद उड़ा देता है।

चाहो उसे पहन लो, चाहो
फेंको उसे उतार।
तकिया तो तकिया ही है, वह
नहीं गले का हार।

खरीदना हो इसे अगर
तो खाली कर दो गोलक
मज़ा तभी आता है भइया
जब अपनी हो ढोलक।

जालीराम

जालीदार बनावट इनकी, नहीं मगर ये जाली।
कुछ कहते नेपाली हैं ये, कुछ कहते गढ़वाली।
अभी चार दिन हुए नहीं इनको धरती पर आए
मगर हाँकते ऐसी मानो दुनिया देखी-भाली

खाल में जाली, बाल में जाली
नाक-कान तक जाली;
बातें ऐसी, लगे हमीं ने
इनकी नींद चुरा ली।

बड़े खिलाड़ी बनते इनकी देखो अदा निराली
गेंद चाहिए ऐसी जिस पर मढ़ी हुई हो जाली।
नहीं खेलते ये ज़मीन पर, हवा चाहिए इनको।
बात-बात पर बजवाते हैं बच्चों से ये ताली।

हाथ में जाली, पाँव में जाली,
ऐसे ये फुटबाली।
गोल करें, तो कैसे? इनकी
क़िस्मत भी तो जाली।

22.3.92

कौन यह ?

कौन यह कूबड़ निकाले
घड़े को सिर पर सम्हाले
कहाँ से यह आ रहा है ?
कहाँ को यह यह जा रहा है ?

हाँफने को मुँह खुला
है क्या हवा की भी कमी ?
क्या अजब हुलिया है इसका
पेड़ है या आदमी ?

पीठ में कीलें ठुँकी हैं
पाँव में पहिए जड़े;
पूछते फिरते हैं मानो
कहाँ हों ये अब खड़े ?

पेड़ थे ये, सींचते थे
हम इन्हें, फिर ये हमें।
फिक्र अब उनको यही बस
जमें तो कैसे जमें?

ढो रहे पानी तभी तो
लगीं सबकी बारियाँ।
कुलीगीरी कर रही हैं
अब हमारी क्यारियाँ।

लड़की चली

लड़की चली
बतख सी भली
बरसते रंग
बिरज की गली

अरे क्या हुआ ?
बता दो बुआ
कहाँ वो सुआ?
अरे क्या हुआ ?

कहाँ वह पली ?
कहाँ वह चली ?
कहाँ वह गली ?
नमक की डली ?

पंख प्रसाद

चले आ रहे पूँछ निकाल
जैसे बहुत बुरा हो हाल
बड़ी कसरती काठी है
तेल पिए ज्यूँ लाठी है
पता नहीं फिर भी क्यूँ लोग
कहते हैं इनको डरपोक।

मुँह में देखो, है पिस्तौल
अगर जमा दें ये दो धौल
बड़े-बड़े माँगें पानी
वह तो कहो, मेहरबानी
इनकी, जो हमसे अब तक
नहीं लड़ाई है ठानी।

जो भी इनको भुने चने
खिलवा दे, उसके अपने
फौरन ये बन जाते हैं
बरसों तक गुन गाते हैं
वैसे इनको देख भले
सभी चाहते बला टले।

कुछ दिन करी हवा से बात
कहलाए भी पंख प्रसाद
पंख एक दिन अपने-आप
कुतर गया कोई, चुपचाप
तबसे इसी मुहल्ले से
चिपके आप निठल्ले से।

चित्र-कन्या

कैसी यह चख-चख है!
किसने कहा बतख है!
पानी पर चलनेवालों से
इसकी चाल अलग है।

कैसी यह हलचल है!
किसने कहा कमल है!
रेखागणित रटाया, निकला
अंकगणित का हल है।

आँखें क्या, खिड़की हैं
गरदन क्या, झिड़की है।
अरे, दिखी कल रात, वही
यह सपने की लड़की है।

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 7845
Date 22.3.92

Library IIAS, Shimla
H 398.8 Sh 12 H
00078453

मूल्य : रु. 12.00

© रमेशचंद्र शाह ● तृतीय संस्करण : 1990
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110 002, द्वारा प्रकाशित
और प्रभात ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली-110 002 द्वारा मुद्रित

चित्रकार—आवरण : चंचल; अंतर्सज्जा : राजुला शाह